मैथिली (अनिवार्यभाषा)
Part-II
(Sc., Arts, Com.)

Lecture No-4
Unit-2

डॉ. अरविन्द झा
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा
मो:-9040201409

संकलन (निबंध संग्रह)

साहित्य ककरा कहै?

— डॉ. सुभद्र झा

डॉ० सुभद्र झा भाषा विज्ञान शास्त्र क प्रकाण्ड विद्वान छलाह आ विद्यापति पदावली के अंग्रेजी मे व्याख्या कए विश्व भरिक जनसमुदाय के विद्यापति क गीत सँ अवगत करौलनि। हिनक रचि कए सँ मैथिली साहित्य आ मिथिला क्षेत्र सेहो समृद्ध भेल। हिनक गद्य शैली समालोचक दृष्टि सँ फराक छल जे हिनक विलक्षणताक दर्शन करबैछ। हिनक तीन गोट मौलिक मैथिली रचना साहित्य के समृद्ध करैछ - प्रवास-जीवन, यात्रा प्रकरणक-शतक आ नातिक पत्रक उत्तर। नातिक पत्रक उत्तर पुस्तक पर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार भेटल छलनि।

Scanned with CamScanner

प्रस्तुत निबन्ध- 'साहित्य ककरा कहीर' मानसिक पत्रक उत्तर' सँ लेल गेल अछि। एहि मे लेखक लिखैत छथि जे- आधुनिक ठाकुर सो लिखैत छी जे कोनो साहित्यिक निबन्ध पढ़ला, केओ कहता रहैछ, सभक इच्छा रहैत छैक, हमर पुस्तक पढ़निहार, सुननिहार, देखनिहार के नीक लगलैक वा नहि से जनबाक इच्छा सभ के रहैत छैक। जेना मनुष्य के अपन बनाओल भोजन प्रशंसा वा अनुमोदन क इच्छा सभ क रहैत छैक। यद्यपि मुँह पर कएल गेल प्रशंसा गारिसँ अधलाह होत' सभ कहता अभ्यास- मार्ग मे कहल गेल अछि जे सन्यासी अपन प्रशंसा आ आनकर निन्दा प्रशंसा सँ दूर रहबाक चाही। परन्तु देवता होथि वा ऋषि होथि राजा होथि, मंत्री होथि, आबिल होथि, गोसाईं होथि, जन होथि वा खवास कमनिहार बाड़ि-जनानी सभ के अपन प्रशंसा नीक लगैत छैक। महर्षि नारदक शब्द मे कहल जा सकैछ- प्रशंसा सँ सम्पूर्ण संसार प्रसन्न होइछ तथा निन्दा सँ सबके अप्रसन्नता होइत छैक।

ई तँ भेल प्रशंसाक गप्प, आब प्रश्न अछि जे साहित्य ककरा कहीर एकर निर्धारण करब कठिन! कारण साहित्यकार तुलसी दास सेहो छलाह, हरिमोहन बाबू सेहो छलाह। बाबू साहेब चौधरी आदि सेहो साहित्यकार छलाह। साहित्यकार विदेक साहित्य

भिन्न-भिन्न आदि। जेना मैथिली साहित्य
नाट्य साहित्य, लोक साहित्य, विधि साहित्य,
दर्शन साहित्य, इतिहास साहित्य आदि।
ते साहित्य शब्द जतऽ-ततऽ प्रयोग
कएल जाइछ तथापि एकर अर्थ होइछ
जतए होलैक साहित्य। ते कहि सकैत
छी जे कोनो विषयक लिखित वा मौखिक
वर्णन आदि विषयक साहित्य थिक परन्तु
से ई होइछ जे विज्ञापन, पोस्टर आदि
सेहो साहित्य कहल जाइछ। मुदा
समाज ओकरे साहित्य मानैछ जे समाज
मे समादृत होइछ तथा अपन रचना सँ
साहित्यिक स्थान प्राप्त करैछ। ते विज्ञापन
इत्यादि के साहित्य नहि मानल जा सकैछ।
तखन प्रश्न उठैछ जे लेखक मात्र वा रचनासँ
साहित्यिक कहलाइ नऽ आधारे कहैछ
जा सुनत सेहो साहित्यिक कहलाइ प्रमुख
सर जगदीश चन्द्र बोस सेहो साहित्यिक
मानल जेताह। मुदा से नहि जगदीश चन्द्र
बोस साहित्यिक नहि आ वैज्ञानिक कहलाह।
जेना विज्ञान जानिहार वैज्ञानिक इतिहास
जानिहार इतिहासज्ञ अर्थशास्त्र के अर्थशास्त्री,
समाज शास्त्र के समाजशास्त्री, एहिना सँ
दार्शनिक नाटक व काव्यक (साहित्यक)
रचना करथि से साहित्यिक वा साहित्यकार।
यथार्थ मे व्यवहारिक दृष्टिसँ
साहित्य तथा काव्य एक समानार्थक शब्द
संस्कृत मे साहित्य तथा काव्य एक प्रयोग

प्रायः एकर अर्थ ई होइछ जेना - साहित्य दर्पण तथा काव्य प्रकाश सन पोथीक प्रतिपाद्य विषय अछि "कविकर्म समीक्षा"। एहिमे काव्यक लक्षण, भेद, अंग-उपांगक विवरण, गुण-दोष, अलंकारक वर्णन रहैछ अनेक छन्द आदि जे साहित्य दर्पणमे एकर अतिरिक्त नाटकक वर्णन अछि जे काव्य प्रकाशमे नहि। तें जे काव्य-प्रकाशमे वर्णित काव्य होइत नाटकक गणना काव्य मध्य नहि होयत। जेना गद्य, पद्य, चम्पू, अभिनय ई चारि तें काव्यक प्रकार थिक। काव्य प्रकाशमे काव्यक जे लक्षण कहल गेल अछि ओ नाटकहु मे छैक तखन ओहि काव्य थिक। मूल विषय साहित्य के छोड़ि जे प्रासंगिक आधार पर काव्यक लक्षण मानल जायत तँ तथा कहिनिहार कथाकार कें लोक साहित्यिक कहत छैक, तँ ओ अपनाक प्रतिष्ठित बुझैत छथि।

———X———

डॉ॰ अरविन्द कुमार